

(Topic - चिंतन : समस्या-समाधान)

परिभाषा एवं स्वरूप (Definition and Nature) - चिंतन का अर्थ है सोचना। जब हमारे सामने कोई समस्या उत्पन्न होती है तो हम उसको हल करने के लिए सोच विचार करने लगते हैं। किसी समस्या के घाटे में सोच विचार करने की क्रिया को ही चिंतन कहते हैं। एक गाड़ी (सिगणल) की गाड़ी अचानक रुक जाती है और स्टार्ट नहीं होती है तो यह घटना उसके लिए एक समस्या बन जाती है। समस्या का अर्थ उस घटना या परिस्थिति से है जिसका कोई तार्किक हल उपलब्ध न हो। अब वह गाड़ी के बंद होने के सम्भव कारणों तथा इसे स्टार्ट करने के उपयुक्त उपायों के सम्बंध में सोचने लगता है। सोचने की यह क्रिया तब तक चलती है, जब तक कि समस्या का समाधान नहीं हो जाता है। जैसे-ही गाड़ी स्टार्ट हो जाती है, इस सम्बंध में चालक में सोचने की क्रिया समाप्त हो जाती है। अतः सोचने या चिंतन का अर्थ ही समस्या की उत्पत्ति के साथ होता है और समस्या के समाधान के मिल जाने के साथ ही उसका अंत हो जाता है। इसलिए चिंतन को समस्या समाधान की प्रक्रिया भी कहा जाता है।

विन्न विन्न मनोवैज्ञानिकों ने चिंतन की परिभाषा करने का प्रयास किया है। (Weber) ने कहा है "चिंतन एक विचारधारात्मक क्रिया है, जिसका स्वरूप प्रतीकात्मक होता है जिसकी उत्पत्ति व्यक्ति के सामने उपस्थित समस्या से होती है जिसमें समस्या वृत्ति की दशा में कुछ प्रयत्न और भूल होते हैं, तथा अन्त में समस्या का समाधान मिल जाता है।" इसी तरह (Hollnagel and Akgunduz)



1976) के अनुसार, "चिंतन एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें घटनाओं तथा वस्तुओं के प्रतिनिधियों के रूप में प्रतीकों की विशेषता होती है। रेबा (Reber, 1987) के अनुसार, "सामान्यतः चिंतन का अर्थ है, विचारों, प्रतिमाओं, प्रतीकों, शब्दों, कथनां, समूहियों, अवबोधनों विश्वासों, मन्थना अभिप्रायों का अन्तःमानसिक या प्राणसिक परिचालन।" इन परिभाषाओं के विश्लेषण से चिंतन के सम्बंध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं।

(i) चिंतन एक विचारमय प्रक्रिया है। इसका सम्बंध विचारों से होता है। इसमें प्रतीकों की प्रधानता होती है। ये प्रतीक पूर्व की घटनाओं एवं वस्तुओं के प्रतिनिधि के रूप में काम करते हैं। यह स्पष्ट होना चाहिए कि चिंतन का सम्बंध उपस्थित घटनाओं या वस्तुओं से होना सकारात्मक नहीं है।

(ii) चिंतन के लिए समस्या का होना आवश्यक है। व्यक्ति के सामने जब कोई ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसका कोई तत्कालिक समाधान नज़र नहीं आता है तो उसके सामने एक समस्या आ खड़ी होती है और इसी समस्या के साथ चिंतन क्रिया शुरु हो जाती है।

(iii) चिंतन में प्रयत्न और श्रम होते हैं। जब व्यक्ति अपनी अपनी समस्या के समाधान के लिए प्रयत्न करता है तो कभी उसे सफलता मिलती है और कभी असफलता में प्रयत्न तथा श्रम प्राणसिक स्तर पर समाधान के समाधान तक जारी रहते हैं।

(iv) चिंतन में प्राणसिक तत्पत्ता का भी हाथ होता है। व्यक्ति समस्या के समाधान के समय एक विशेष दिशा में

मानसिक रूप से तल्प हो उठता है और उसी दिशा में प्रयत्न और श्रम को समाप्ति का समाधान हो जाने लगता है। यदि वह सही दिशा में तल्प होता है तो समाधान जल्दी ही हो जाती है और यदि गलत दिशा में तल्प होता है तो समाधान समाधान कठिन बन जाता है।

(ग) चिंतन की क्रिया समाप्ति के समाधान तक जारी रहती है। लक्ष्य की प्राप्ति होते ही समाधान ही हो जाती है और इसी के साथ चिंतन क्रिया का अन्त हो जाता है।